# वेदो का परिचय

वेद शब्द "विद्" धातु से निष्पन्न है। विद् धातु का अर्थ है, उत्तम ज्ञान। वेद किसी एक साहित्यिक रचना का नाम नहीं है अपितु वेद उस समस्त वाङ्मय का नाम है जो शताब्दियों में ही नहीं अपितु सहस्त्राब्दियों मे जाकर ऋषियो द्वारा उपलब्ध हुआ है तथा जो ज्ञान स्वरूप है और परम्परा से मौखिक रूप में ही चलता रहा है।

वैदिक साहित्य संसार के सर्वाधिक प्राचीन ग्रंथ है। संसार के सम्पूर्ण साहित्य मे भारतीय साहित्य की श्रेष्ठता का एकमात्र कारण वैदिक साहित्य ही है।

आर्यो की सभ्यता व संस्कृतियाँ समाज और धर्म के जानने का एकमात्र साधन ही वैदिक साहित्य है। धर्म के क्रमिक विकास तथा आर्य भाषा के मूल स्वरूप का ज्ञान भी इसी साहित्य से प्राप्त होता

पाश्चात्य विद्वान विंटर नित्स ने इसी कारण लिखा है:—
"जो मनुष्य वैदिक साहित्य को समझने में असमर्थ रहता है, वह भारतीय संस्कृति को नहीं जान सकता।"
"यदि हम अपनी ही संस्कृति के प्रारंभिक दिनो की अव

को जानने के उच्छुक है, यदि हम सबसे पुरानी भारोपीय संस्कृति को समझना चाहते है तो हमें भारत की शरण लेनी होगी जहाँ एक भारोपीय जाति का सबसे पुराना साहित्य सुरक्षित है।"

→ वेदो के प्रधानत: दो विभाग है-

1) संहिता
2) ब्राम्हण

मंत्रो के समुदाय का नाम संहिता तथा ब्राम्हण ग्रंथो में एक प्रकार से संहिताओ के संगृहीत मंत्रो की विस्तारित व्याख्या की गई है।

परन्तु मुख्य रूप से ब्राम्हण ग्रंथो का लक्ष्य यज्ञ का सुविस्तार वर्णन करना ही रहा है।

इन ब्राम्हण ग्रंथो के तीन भाग मिलते है-

1) ब्राम्हण ग्रंथ
2) आरण्यक
3) उपनिषद्

ब्राम्हण ग्रंथो में मन्त्रो की व्याख्या व यज्ञो का विस्तार पूर्वक विवेचन है।

आरण्यको में यज्ञो के आध्यात्मिक रूप का वर्णन मिलता है। ये आरण्यक ग्रंथ जनसाधारण से जंगलो में पढ़े जाने के कारण ही सम्भवत: आरण्यक कहलाते है।

ब्राम्हण ग्रंथ गृहस्थीयो के लिए उपयोगी रहे है। तथा उपनिषद् में ब्रम्ह विद्या का वर्णन प्राप्त होता है।

Scanned with CamScanner

संहिताओं में मन्त्रो का समुच्चय है। किसी देवता विशेष की स्तुति में प्रयुक्त होने वाले अर्थ को स्मरण कराने की क्षमता वाले वाक्य मंत्र कहलाते हैं।
संहिताएँ चार हैं—

1) ऋग्वेद संहिता
2) यजुर्वेद संहिता
3) सामवेद संहिता
4) अथर्ववेद संहिता

इन संहिताओ का संकलन "वेद-व्यास" मुनि द्वारा यज्ञ की आवश्यकताओं को दृष्टि में रखकर किया गया था।
प्रत्येक यज्ञ के लिए चार ऋत्विजो की आवश्यक होती है। —

1) होता
2) उद्गाता
3) अध्वर्यु
4) ब्रम्हा

1) होता — होता का कार्य है कि यह यज्ञ के अवसर पर देवता विशेष की प्रशंसा के मन्त्रो का उच्चारण करता हुआ उस देवता का आह्वान करे।

2) उद्गाता — इसका शाब्दिक अर्थ है - उच्च स्वर में गाने वाला। यह देवो की स्तुति में स्वर सहित मंत्रगान करता है। इसी गान की पारिभाषिक संज्ञा "स्तोत्र" है

3) अध्वर्यु :- यह यज्ञो का विधिवत सम्पादन करता है। अध्वर्यु के यज्ञ के प्रमुख कर्मो का निष्पादक प्रधान ऋत्विज है। इसी आध्वर्यव कर्म के लिए आवश्यक मंत्रो का संकलन यजु संहिता मे प्राप्त होता है।

4) ब्रह्मा :- इसका कार्य यज्ञो का सम्यक निरीक्षण करना है जिससे यज्ञ अनुष्ठान में कोई त्रुटि ना हो। यद्यपि यज्ञों मे मंत्रो के उच्चारण में कोई त्रुटि हो जाती है और उससे कोई विघ्न होने की संभावना होती है तो ये तुरन्त मंगलकारी मंत्रो का उच्चारण करके उसे दूर करता है। इसके लिए आवश्यक मंत्रो का संकलन अथर्ववेद संहिता में संकलित है।

Scanned with CamScanner